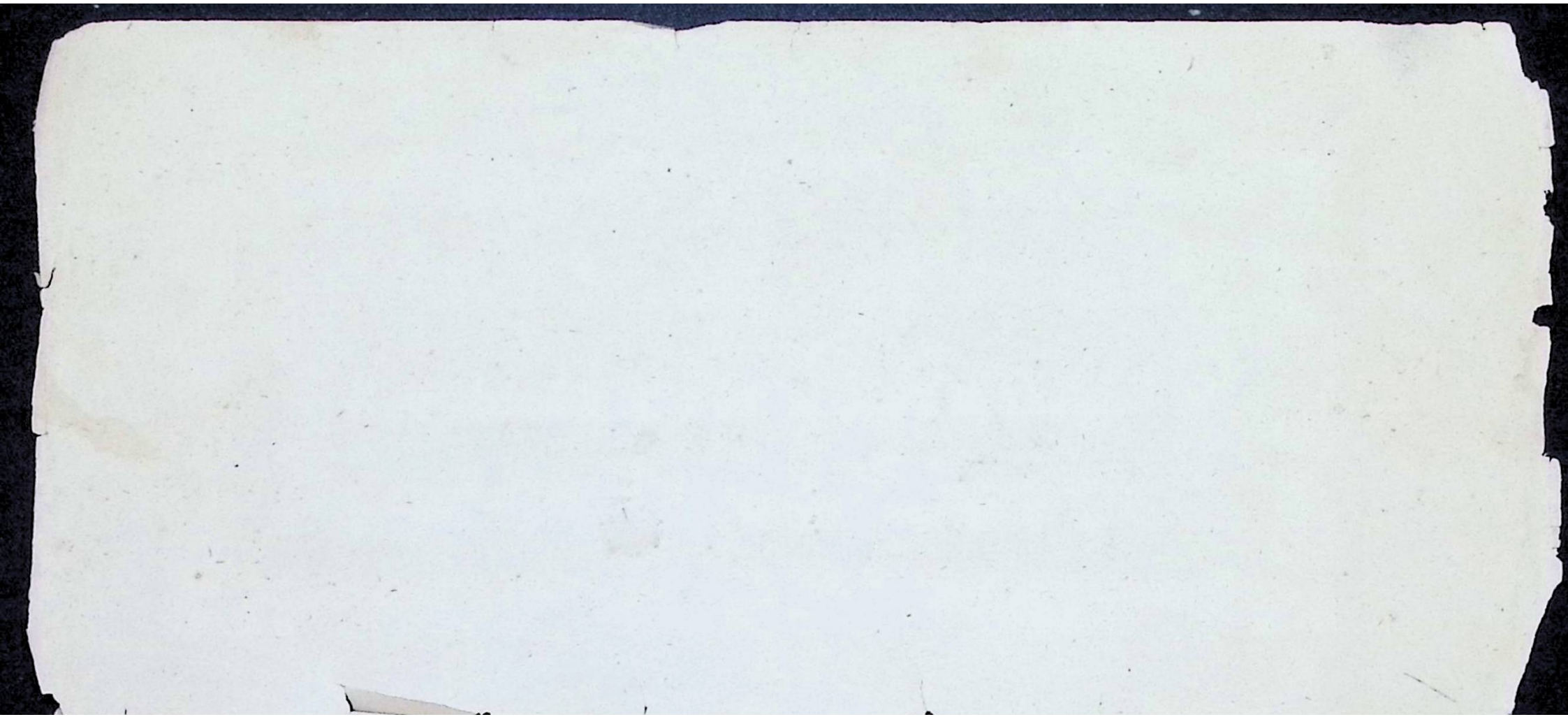
Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अथानन्तव्रतकथा भाषाटीका प्रारभ्यते ॥

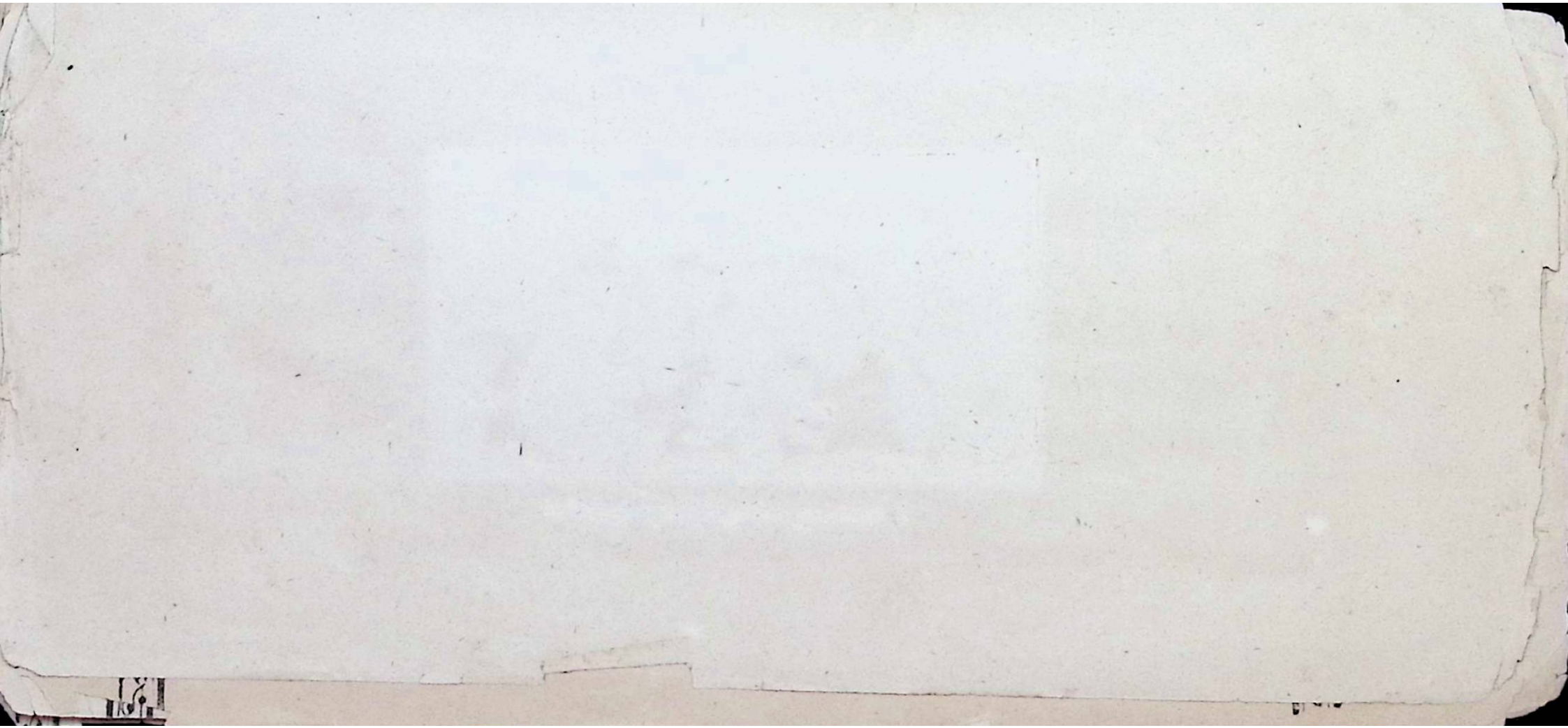
CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लक्ष्मीवेङ्कटेशाभ्यां विजयतेतराम् ।



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ भाषाटीका अनन्तकी पूजाविधि ॥ सवेरेके समय गंगादि पवित्र नदियोंमें स्नान कर और अपनी नित्यक्रियाको कर अनन्तभगवान्का अपने मनमें ध्यान करताहुआ पवित्र होकर

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ अथानन्तपूजाविधिः ॥ ॥ प्रातर्नद्यादिकेस्नात्वा नित्यकर्मसमाप्यच ॥ अनन्तंहृदयेकृत्वाशुचिस्तत्रसमाहितः ॥ अव्रणंकलशंचैववस्त्रयुग्मेनवेष्टितम् ॥ मुष्टिमात्रेणदर्भैस्तुफणिराजंचकारयेत् ॥ स्थापयेत्कलशस्याग्रेजगदाधारमव्ययम् ॥ आराधयेदनन्तंचतस्मिन्कुम्भे विशेषतः ॥ गोचर्ममात्रमालिप्यगोमयेनविचक्षणः ॥ तन्मध्येस्थण्डिलं

बैठै॥चिकने कलशेको दो वस्त्रोंसे लपेटकर रक्खै और मुट्ठीभर कुशाके शेषजी बनावै॥उस कलशके धोरे शेषजीको स्थापितकर कलशमें अनन्तदेवका ध्यानकरै ॥ एक गौकी बराबर जमीनको गोबरसैं लीपकर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चतुर मनुष्य पृथ्वीको साफकर उसमें आठ पतोंवाला कमल बनावै ॥ कलशमें आमके पत्ते रख उस

कृत्वापद्ममष्टदलंलिखेत् ॥ तस्योपरिन्यसेत्कुम्भंचूतपल्लवसंयुतम् ॥ प्राणा यामंततःकृत्वातिथ्यादिपरिकीर्तयेत् ॥ ममसहकुटुम्बस्यक्षेमस्थैर्यायुरारो ग्यचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थंमयाआचरितस्यआचर्यमाणस्यचव्रतस्यसम्पू र्णफलावाप्त्यर्थं श्रीमदनन्तदेवताप्रीत्यर्थंयथाज्ञानेनध्यानावाहनादिषोड शोपचारैःश्रीमदनन्तपूजांकरिष्ये ॥ तथाचआसनादिकलशाराधनादि चकरिष्ये ॥ ॥ इतिसं० ॥ ॥ पृथिवीति० ॥ इत्यासनविधिंकृत्वा ॥

कमलके ऊपर स्थापित करै फिर प्राणायाम करकै अभ्यागतोंको बुलावै और (मम० सह) यहाँसे लेकर संकल्प करै ॥ (पृथिवीति०) इस मंत्रसे आसनविधिको करै॥ (कलश०सर्व०सिता०) इत्यादि मंत्रोंसे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कलशमें वरुणका पूजन करै ॥ फिर शंख और घंटाकीभी पूजाकरै ॥ (अपवित्रः०)इस मन्त्रसे पूजाकी

कलश० ॥ सर्वेसमुद्राः० ॥ सितासिते० ॥ कलशेवरुणंसम्पूज्य ॥ ततः शङ्खंघण्टांचपूजयेत् ॥ अपवित्रःप० ॥ पूजाद्रव्याणिआत्मानंचप्रोक्ष्य यमुनांपूजयेत् ॥ ॥ तद्यथा ॥ श्रीमदनन्तव्रताङ्गत्वेनश्रीयमुनापूजनं करिष्ये ॥ लोकपालस्तुतांदेवीमिन्द्रनीलसमुद्भवाम् ॥ यमुनेत्वामहंध्याये सर्वकामार्थसिद्धये ॥ ध्यानम् ॥ सरस्वतिनमस्तुभ्यंसर्वकामप्रदायिनि ॥ आगच्छदेवियमुनेव्रतसंपूर्तिहेतवे ॥इमंमेगङ्गे०॥इत्यावाह्य॥ सिंहासनसमा

सामग्रीको और अपने आपको मार्जन करकै पूजा करै सो जैसे लिखाभीहै॥श्रीअनन्त देवका अंगहोनेसे य मुनाकी पूजा करताहूं (लोकपालास्तु०) इस मंत्रसे ध्यान करै (सरस्वति०) इससे आवाहन करै॥ (सिंहास

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न०) इस मंत्रसे आसनप्रदान करै(रुद्रपादे) इस मंत्रसै पाद्य दे(गरुडपादे०)इस मंत्रसै अर्घ्यदे॥(विष्णुपादो०)

रूढेदेवशक्तिसमन्विते ॥ सर्वलक्षणसंपूर्णेयमुनायैनमोस्तुते ॥ आसनम् ॥
रुद्रपादेनमस्तुभ्यंसर्वलोकहितप्रिये ॥ सर्वपापप्रशमनितराङ्घ्रिण्यैनमोस्तुते॥
पाद्यम् ॥ गरुडपादेनमस्तुभ्यंशंकरप्रियभामिनि ॥ सर्वकामप्रदेदेवि
यमुनेतेनमोनमः ॥ अर्घ्यम् ॥ विष्णुपादोद्भवेदेविसर्वाभरणभूषिते ॥
कृष्णमूर्तेमहादेविकृष्णावेण्यैनमोनमः ॥ आचमनम् ॥ सर्वपापहरेदेवि
विश्वप्रियप्रदर्शिनि ॥ सौभाग्यंयमुनेदेहियमुनायैनमोस्तुते ॥ मधुपर्कम् ॥
नन्दिपादेमहादेविशंकरार्धशरीरिणि ॥ सर्वलोकहितेदेविभीमरथ्यैनमो

इस मंत्रसे आचमन करै (सर्वपापहरे०) इस मंत्रसै मधुपर्कप्रदान करै ॥ (नन्दिपादे०)इस मंत्र करकै

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पंचामृतसे स्नान करावै ॥ (सिंहपादोत्तमे०) इस मंत्रकरकै पवित्रजलसै स्नान करावै (विष्णुपादाब्ज०)

स्तुते ॥ पञ्चामृतस्नानम् ॥ सिंहपादोत्तमेदेविनारसिंहसमप्रभे ॥ सर्वल
क्षणसम्पूर्णेभवनाशिनितेनमः ॥शुद्धोदकस्नानम्॥विष्णुपादाब्जसंभूतेगङ्गे
त्रिपथगामिनि ॥ सर्वपापहरेदेविभागीरथ्यैनमोस्तुते ॥ श्वेतवस्त्रम् ॥
त्रैयम्बकजटोद्भूतेगौतमस्याघनाशिनि ॥ सप्तधासागरंयान्तिगोदावरिनमो
स्तुते ॥ कञ्चुकीम्॥ माणिक्यमुक्तावलिकौस्तुभांश्चगोमेदवैर्डूयसुपुष्परागैः ॥
वज्रैश्चनीलैश्चसुशोभितानिगृहाणसर्वाभरणानिदेवि ॥आभरणानि ॥ चन्द
नागरुकस्तूरीरोचनंकुङ्कुमंतथा ॥ कर्पूरेणसमायुक्तंगन्धंदद्मिचभक्तितः ॥

इस मंत्रसे श्वेतवस्त्र प्रदान करै ॥ (त्रैयंबकं०) इस मंत्रसे कंचुकी (चोली)प्रदान करै (माणिक्य०) इस

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गन्धम् ॥ श्वेतांश्चचन्द्रवर्णाभान्हरिद्रारागरञ्जितान् ॥ अक्षतांश्चसुरश्रेष्ठेद
दामियमुनेशुभे ॥ अक्षतान् ॥ मन्दारमालतीजातीकेतकीपाटलैःशुभैः
पूजयामिचदेवेशियमुनेभक्तवत्सले ॥ पुष्पाणि० ॥ अथाङ्गपूजा० ॥ ॥ च
श्चलायैनमः ॥ पादौपूजयामि ॥ चपलायैनमः ॥ जानुनीपूजयामि ॥ भक्त
वत्सलायै० ॥ कटीपू० ॥ हरायै० ॥ नाभिंपूजयामि ॥ मन्मथवासिन्यै० ॥
गुह्यं पू० ॥ अज्ञानवासिन्यै० हृदयंपू० ॥ भद्रायैनमः ॥ स्तनौपू० ॥ अघह
न्त्र्यै० ॥ भुजौपूज० ॥ रक्तकण्ठ्यै० ॥ कण्ठंपू० ॥ भवहन्त्र्यैनमः ॥ मुखंपू० ॥
गौर्यैन० ॥ नेत्रेपू० ॥ भागीरथ्यै० ॥ ललाटंपू० ॥ यमुनायै० ॥ शिरःपू० ॥

मंत्रसै सब गहने देने चाहिये ॥ (चंदनागरु०) इस मंत्रसै गंध दे ॥ (श्वेतां०) इस मंत्रसे अक्षतदे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(मन्दारमालती०) इस मंत्रसे पुष्पदेकर अंग पूजा करै ॥ (चंचलायै०) इत्यादिसे लेकर (सरस्वत्यै)

सरस्वत्यैनमः ॥ सर्वाङ्गंपूज० ॥ अथनामपूजा ॥ यमुनायै० ॥ सितायै० ॥ कमलायैन० ॥ उत्पलायै० अभीष्टप्रदायै० ॥ धात्र्यै० ॥ हरिहररूपिण्यै-न० ॥ गङ्गायैन० ॥ नर्मदायैनमः ॥ गौर्यै० ॥ भागीरथ्यै० ॥ तुङ्गायै० ॥ भद्रा-यै० ॥ कृष्णावेण्यै० ॥ भवनाशिन्यै० ॥ सरस्वत्यै० ॥ कावेर्यै० ॥ सिन्धवे० ॥ गौत-म्यैन० ॥ गोमत्यै० ॥ गायत्र्यै० ॥ गरुडायै० ॥ गिरिजायै० ॥ चन्द्रचूडायै० सर्वेश्वर्यै० ॥ महालक्ष्म्यै० ॥ सर्वपापहरेदेविसर्वोपद्रवनाशिनि ॥ सर्वसंपत्प्र-

इत्यादि पर्यन्त सब अंगोंकी पूजा है सो मूलमेंही स्पष्ट है ॥ फिर नामोंकी पूजा करै ॥ (यमुनायै०) इत्यादिसे लेकर ॥ और (महालक्ष्म्यै०) इत्यादि तलक नामकी पूजाभी मूलमेंही स्फुटहै सो उसको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कर (सर्वपाप०) इस मंत्रसे यमुनाको प्रणामकर नामपूजाको समाप्त करदे ॥ (दशांगो०) इससे धूपदे ॥

देदेवियमुनायैनमोस्तुते॥ इतिनामपूजा ॥ दशाङ्गेगुग्गुलूद्भूतश्चन्दनागुरु-
संयुतः ॥ कपिलाघृतसंयुक्तोधूपोयंप्रतिगृह्यताम् ॥ धूपंस० ॥ घृतवर्तिस-
मायुक्तंवह्निनायोजितंमया ॥ गृहाणदीपकंदेविसर्वैश्वर्यप्रदायिनि ॥ दीपं०
॥ शर्करामधुसंयुक्तंदधिक्षीराज्यसंयुतम् ॥ पक्वमन्नंमयादत्तंनैवेद्यंप्रतिगृ-
ह्यताम् ॥ नैवेद्यं० ॥ पानीयंपावनंश्रेष्ठंगङ्गादिसरिदुद्भवम् ॥ हस्तप्रक्षाल-
नंदेविगृहाणसुखशोधनम् ॥ हस्तप्रक्षालनं० ॥ मुखप्रक्षालनं० ॥ कर्पूरे

(घृतवर्ति०) इत्यादिकसे दीपक कर (शर्करा०) इत्यादिसें मिष्टान्न दे ॥ (पानीयं०) इससे हाथ धोवै और इसीसे मुखभी धोवै ॥ (कर्पूरेण०) इससे हाथ धोकर चंदनदे ॥ (इदंफलं०) इससे अच्छे पके २

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फल दे ॥ (पूगीफलं०) इससे सुपारी चढावै ॥ (हिरण्य०) इत्यादिसे दक्षिणाप्रदान करै ॥ (त्रैलोक्य०) इससे

णसमायुक्तंयमुनेचारुचन्दनम् ॥ समर्पितंमयातुभ्यंकरोद्वर्तनकंकुरु ॥ क
रोद्वर्तनार्थेचन्दनं० ॥ इदंफलमितिफलं० ॥ पूगीफलमितिताम्बूलं० ॥ हिर
ण्यगर्भेतिदक्षिणां० ॥ त्रैलोक्यपावनेगङ्गे अन्धकारविनाशिनि ॥ पञ्चार्ति
क्यंगृहाणेदंविश्वप्रीत्यैनमोस्तुते ॥ आर्तिक्यं० ॥ केतकीजातिकुसुमैर्मल्लि
कामालतीभवैः ॥ पुष्पाञ्जलिर्मयादत्तस्तवप्रीत्यैनमोस्तुते ॥ पुष्पाञ्जलिं
समर्पयामि ॥ यानिकानिचेतिप्रदक्षिणाम् ॥ अन्यथाशरणंनास्तित्वमे
वशरणंमम ॥ तस्मात्कारुण्यभावेनसंरक्षपरमेश्वरि ॥ नमस्का० ॥

आर्ती करै (के तकी०) इस करकै पुष्पांजलि समर्पण करै ॥ (यानिकानि०) इत्यादिकसे नमस्कार करै ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(सुरासुरेन्द्रादि०) इस करकै प्रार्थना करै ॥ यहां यमुनाकी पूजा समाप्त होगई ॥ यमुना कलशके ऊपर

सुरासुरेन्द्रादिकिरीटमौक्तिकैर्युक्तंसदायत्तवपादपङ्कजम् ॥ परावरंपातुव
रंसुमङ्गलंनमामिभक्त्याममकामसिद्धये ॥ भवानिचमहालक्ष्मिसर्वकामप्र
दायिनि ॥ व्रतंसंपूर्णतांयातुयमुनायैनमोस्तुते ॥ इतिप्रार्थना ॥ इतियमु
नापूजा ॥ यमुनाकलशोपरिपूर्णपात्रंनिधायास्योपरिसप्तफणायुतंशेषंसं
स्थाप्यपूजयेत् ॥ अथध्यानम् ॥ ब्रह्माण्डाधारभूतंचयमुनान्तरवासिनम् ॥
फणासप्तसमायुक्तंध्यायेऽनन्तंहरिप्रियम् ॥ ध्यायामि ॥ शेषंसप्तफणायुक्तंका

पूर्णपात्रको स्थापितकर उसके ऊपर सातफणावाले शेषजीको स्थापिकर पूजन करै ॥ इस अगाडी लिखेहुए मंत्रसे ध्यान करै (ब्रह्माण्डाधार०) इस मंत्रसै ध्यान करै (शेषंसप्तफणायुक्तं०) इस मंत्रसै

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शेषजीका आवाहन करै ॥ (नवनागकुलाधीश०) इस मंत्र करकै शेषजीको आसनदे ॥ (अनन्तप्रियशे-

लपन्नगनायकम् ॥अनन्तशयनार्थंत्वांभक्त्याह्यावाहयाम्यहम्॥आवाहनम्॥
नवनागकुलाधीशशेषोद्धारककाश्यप ॥ नानारत्नसमायुक्तमासनंप्रतिगृह्य
ताम् ॥ आसनम् ॥ अनन्तप्रियशेषेशजगदाधारविग्रह ॥ पाद्यंगृहाणभक्त्या
त्वंकाद्रवेयनमोस्तुते ॥पाद्यं०॥ कश्यपानन्दजनकमुनिवादितभोःप्रभो ॥ अ
र्घ्यंगृहाणसर्वज्ञसादरंशंकरप्रिय ॥ अर्घ्यं० ॥ सहस्रफणिरूपेणवसुधोद्धार
कप्रभो ॥ गृहाणाचमनंदेवपावनंचसुशीतलम् ॥ आचमनम् ॥ कुमाररू

पेश) इस मंत्रसै शेषजीको पाद्य देना चाहिये ॥ (कश्यपानन्दजनक०) इस मंत्रसै अर्घ्य दे ॥ (सहस्रफणिरूपेण०) इस मंत्रसै आचमन करावै (कुमाररूपिणेतुभ्यं०) इस मंत्रसै शेषजीको मधु

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पर्कप्रदानकर करना चाहिये ॥ फिर पंचामृतसे स्नान करावै ॥ (गङ्गादि०) इस मंत्रसे स्नान करावै ॥

पिणेतुभ्यंदधिमध्वाज्यसंयुतम् ॥ मधुपर्कंप्रदास्यामिसर्पराजनमोस्तुते ॥ मधुपर्कम्॥ततःपञ्चामृतस्नानम्॥गङ्गादिपुण्यतीर्थैस्त्वामभिषिञ्चेयमादरात्॥ बलभद्रावतारेशनन्ददश्रीपतेःसखे ॥ स्नानं० ॥कौशेययुग्मन्देवेशप्रीत्यात वमयार्पितम् ॥ गृहाणपन्नगाधीशताक्ष्यशत्रोनमोस्तुते ॥ वस्त्रं० ॥ सुवर्णनि र्मितंसूत्रंग्रथितंकण्ठहारकम् ॥ अनेकरत्नैःखचितंसर्पराजनमोस्तुते ॥ यज्ञो पवीतम् ॥ अनेकरत्नान्वितहेमकुण्डलेमाणिक्यसंकाशितकङ्कणद्वयम्॥हेमा

(कौशेययुग्मम्०) इस मंत्रसै वस्त्रदान करै ॥ (सुवर्णनिर्मितम्०) इससै यज्ञोपवीत दे ॥ (अनेक रत्नान्वित०) इत्यादिसै संपूर्ण गहने देने चाहिये ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(श्रीखंडम्०) इससैं चन्दन चढ़ावै (अक्षताश्च०) इस करकैं अक्षत दे ॥ (करवीरै०) इत्यादि
ङ्गुलीयंकृतरत्नमुद्रिकंहैमंकिरीटंफणिराजतेर्पितम् ॥ सर्वाभरणम्॥श्रीखण्डं०॥
चन्दनम् ॥ अक्षताश्चसुर० ॥ अक्षतान्० ॥ करवीरैर्जातिकुसुमैश्चं० ॥ पुष्पा
णि० ॥ अथाङ्गपूजा० ॥ सहस्रपादाय० ॥ पादौपू० ॥ गूढगुल्फाय० ॥ गुल्फौ
पू० ॥ हेमजङ्घायन० ॥ जङ्घेपू० ॥ मन्दगतये० जानुनीपू० ॥ पीताम्बरधराय०
कटीपू० ॥ गम्भीरनाभायन० नाभिंपूज० ॥ पवनाशनाय० उदरंपू०उरगाय०
हस्तौपू० ॥ कालियायनमः भुजौंपूजयामि ॥ कम्बुकण्ठायनमः कण्ठंपूजया
मि ॥ विषवक्त्रायनमःवक्त्रंपूजयामि ॥ फणाभूषणाय० ललाटंपू० ॥ लक्ष्मणाय०
करकैं फूल चढ़ावै फिर अंगोंका पूजन करैं॥ (सहस्रपादाय०) यहांसे लेकर (अनन्तप्रियाय) तक सब

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अंगकीपूजा है ॥ सो मूलहीमें सीधीरीतिसे होगी ॥ यह अंगपूजा समाप्त होगई ॥ (वनस्पति०) और (साज्यंचवर्ति०) इत्यादिक इन दो मंत्रोंसैं दीप प्रदानकरै ॥ (नैवेद्यम्०) इस करकैं मिष्टान्नदे ॥ फिर

शिरःपूजयामि ॥ अनन्तप्रियाय० सर्वाङ्गंपूजयामि ॥ इत्यङ्गपूजा ॥ वनस्पति०॥साज्यंचवर्ति०॥दीपम् ॥ नैवेद्यंगृ०॥ नैवेद्यम् ॥ मध्येपानीयम् ॥करोद्वर्तनार्थेचन्दनम्०पूगीफ०॥ताम्बूलम् ॥ इदंफलमितिफ०॥ हिरण्यगर्भेतिदक्षिणाम्०॥ श्रियेजातइतिनीराजनम् ॥ नानाकुसुमसंयुक्तंपुष्पाञ्जलि

बीचमें जल देकर लेपन करनेको चन्दन दे ॥ (पूगीफलम्०) इससैं सुपारीदे ॥ (ताम्बूलं०) इससैं पानदे ॥ (इदं०) इत्यादि करकैं फलदे ॥ (हिरण्य०) इससैं दक्षिणादे ॥ (श्रियेजात०) इस करकैं नीराजन करै ॥ (नानाकुसुम०) इत्यादि मंत्र पढ़कर पुष्पदे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(यानिकानि०) इस मंत्रसैं परिक्रमाकरै ॥ (नमोस्त्व०) इस मंत्रसैं नमस्कार करै ॥ (अनन्तकल्पोक्त०)
मिमंप्रभो ॥ कश्यपानन्दजनकसर्पेशप्रतिगृह्यताम् ॥ मन्त्रपुष्पम् ॥ यानिका
नि० ॥ प्रदक्षिणाम्० ॥ नमोस्त्वनन्ताय० ॥ नमस्कारान्०॥ अनन्तकल्पोक्तफ
लंदेहिमेत्वंमहीश्वर ॥ त्वत्पूजारहितश्चार्द्धंफलंप्राप्नोतिमानवः ॥ प्रार्थनाम्० ॥
इतिशेषपूजा ॥ प्राग्द्वारे ॥ द्वारश्रियै० नन्दायै०सुनन्दा०धात्र्यैन०विधात्र्यैन०
चिच्छक्त्यै०शङ्खनिधयेन०पद्मनिधयेन०॥ दक्षिणद्वारे ॥ द्वारश्रियै० चण्डायै०
प्रचण्डायै० धात्र्यैन० चिच्छक्त्यै० मायाशक्त्यै०शङ्खनिधये०पद्मनिधयेनमः ॥

इस मंत्रसैं प्रार्थनाकरैं॥ यह शेषजीकी पूजा समाप्त हुई॥ (द्वारश्रियै०) यहांसे लेकर और (पद्म-
निधये०) इत्यादि पर्यन्त मंत्रोंसे पूर्वके द्वारमें पूजा करै ॥ (द्वारश्रियै०) इत्यादिसें लेकर (पद्मनि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धये०) यहांतकके मंत्रोंसैं दक्षिणके द्वारमैं पूजै ॥ (द्वारश्रियै०) यहांसे लेकर (पद्मनिधये०) तक पश्चिमद्वारे ॥ द्वारश्रियै० बलायै० प्रबलायै० धात्र्यै० विधायै० चिच्छक्त्यैन० मायाशक्त्यै० शङ्खनिधये० पद्मनिधये० ॥ उत्तरद्वारे ॥ द्वारश्रियै० महाबलायै० प्रबलायै० धात्र्यै० विधात्र्यै० चिच्छक्त्यै० मायाशक्त्यै० शङ्खनिधये० पद्मनिधये० अथपीठपूजा ॥ मध्येवास्तुपुरुषायन० मण्डूकाय० कालाग्निरुद्रायन० आधारश क्त्यैनमः कूर्माय० पृथिव्यै० अमृतार्णवाय० श्वेतद्वीपाय० कल्पवृक्षेभ्यो० मणि मन्दिरायन० हेमपीठाय० धर्मा० अधर्माय० ज्ञानाय० वैराग्याय० ऐश्वर्याय० अनैश्वर्याय० सहस्रफणान्वितायानन्ताय० सर्वसत्त्वायन० पद्माय० आनन्दक

मंत्रोंसैं पश्चिमके द्वारमैं पूजाकरै ॥ (द्वारश्रियै०) से लेकर (पद्मनिधये०) तक उत्तरके द्वारमैं पूजा करै ॥ अब सिंहासनकी पूजा करै ॥ (मध्येवास्तुपुरुषाय०) इत्यादि मंत्रोंसैं लेकर—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(अपारशक्ति०) इत्यादि मंत्रोंपर्यन्तसे सिंहासनकी पूजा मूलहीमें देखकर करलेनी चाहिये ॥
न्दायसंविन्नालाय० विकारमयकेसरेभ्यो० प्रकृतिमयपत्रेभ्यो०सूर्यमण्डलाय०
चन्द्रमण्डलाय० वह्निमण्डला० संसत्वाय० रंरजसे० तंतमसे० आत्मने०
परमात्मनेनमः ॥ अन्तरात्मेनमः०ज्ञानात्मने० प्राणात्मने० कालात्मनेनमः ॥
विद्यात्मनेनमः ॥ पूर्वादिदिक्षु ॥ जयायैनमः विजयायैनमः अजितायैनमः
अपराजितायै० नित्यायै० विनाशिन्यै० दोग्ध्यैनमः अघोरायैनमः मङ्गला
यैनमः अपारशक्तिकमलासनायैनमः ॥ इतिपीठपूजा ॥ अस्यश्रीप्राणप्रति
ष्ठामन्त्रस्यब्रह्माविष्णुमहेश्वराऋषयः ॥ ऋग्यजुः सामाथर्वाणिच्छन्दांसि ॥ प

यहां सिंहासनपूजा पूर्ण हुई ॥ इस प्राणप्रतिष्ठा मंत्रके ब्रह्मा, विष्णु, शिव, यह तीन ऋषिहैं ॥ ऋक्,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यजुः, साम, अथर्व, यह छन्दहैं ॥ प्राणपालिका शक्तिदेवताहै ॥ (आंबीजम्०) इन सबको पढकर फिर पीछेसे अनन्तकी पूजा करै ॥ तत्पश्चात् मूलमंत्रसैं नवीन आमके पत्तेकी समान कांतिवाले डाढी

राप्राणशक्तिर्देवता ॥ आं बीजम् ॥ ह्रींशक्तिः ॥ क्रौंकीलकम् ॥ श्रीमदनन्त स्यप्राणप्रतिष्ठापनेविनि० ॥ ॐआंह्रींक्रौंअंयंरंलंवंशंषंसंहंळंक्षंअः क्रौंह्रीं आंअनन्तस्यप्राणाइहप्राणाः॥ॐआंह्रीं० अनन्तस्यजीवइहस्थितः॥ॐआं ह्रींक्रौं० अनन्तस्यसर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणि पादपायूपस्थानीहागत्यसुखंचिरंतिष्ठन्तुस्वाहा ॥ असुनीते० चत्वारिवा

मूछसेयुक्त पीताम्बर धारणकरनेवाले चक्र—शंख-गदाके धारणकरनेवाले शेषशायी समुद्रमें स्थित विष्णुभगवान्का ध्यान करै ॥ यह ध्यानका मंत्रहै ॥ हेदेवताओंके ईश्वर ! जगत्के पति ! ! अनन्त-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्० गर्भाधानादिसंस्कारसिद्ध्यर्थंपञ्चदशप्रणवावृत्तीःकरिष्ये ॥ ॐ०१५॥
रक्ताम्भोधि० परानः ॥ अथानन्तपूजा॥ ततस्तुमूलमन्त्रेणनमस्कृत्यजनार्द
नम् ॥ नवाम्रपल्लवाभासंपिङ्गश्मश्रुविलोचनम् ॥ पीताम्बरधरंदेवंश
ङ्खचक्रगदावरम्॥ अलंकृतंसमुद्रस्थं विश्वरूपंविचिन्तये॥ध्यायामि ॥ आग
च्छानन्तदेवेशतेजोराशेजगत्पते ॥ इमांमयाकृतांपूजांगृहाणपुरुषोत्तम ॥
सहस्रशीर्षा० ॥ आवाहनम्॥नानारत्नसमायुक्तंकार्तस्वरविभूषितम् ॥ आ
सनंदेवदेवेशगृहाणपुरुषोत्तम ॥ पुरुष० ॥ आसनम्०॥गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो
मयाप्रार्थनयाहृतम् ॥तोयमेतत्सुखस्पर्शंपाद्यार्थंप्रतिगृह्यताम्॥ एतावा०॥

देव इस मेरी करी पूजाकौं आप ग्रहण कीजिये ॥ (सहस्रशी०) इससैं आवाहन करै ॥ (नानारत्न०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इससैं और (पुरुष०) इत्यादि दो मंत्रोंसे आसन दे ॥ (गंगा०) यहांसे लेकर (एतावा०) इन दो

पाद्यम्० अनन्तानन्तदेवेशअनन्तफलदायक ॥ अनन्तानन्तरूपोसिगृहाणार्घ्यं नमोस्तुते ॥ त्रिपादू० ॥ अर्घ्यम्० ॥ गङ्गोदकंसमानीतंसुवर्णकलशेस्थितम् ॥ आचम्यतांहृषीकेशप्रसीदपुरुषोत्तम ॥ तस्माद्वि० ॥ आचम० ॥ अनन्तगुणरूपायविश्वरूपधरायच ॥ नमोमहात्मदेवायअनन्तायनमोनमः ॥ यत्पुरु० ॥ स्नानं० ॥ ततःपञ्चामृतस्नानम्० ॥ सुरभेस्तुसमुत्पन्नंदेवानामपिदुर्लभम् ॥ पयोददामिदेवेशस्नानार्थंप्रतिगृह्यताम् ॥ आप्याय० ॥ पयःस्नानंस० ॥ चन्द्रम

मंत्रोंसे पाद्यदे ॥ (अनन्ता०) इससै और (त्रिपादू०) इत्यादि दोमंत्रोंसे अर्घ्यदे ॥ (गंगोदकम्०) इस और (तस्माद्वि०) इन दो मंत्रोंसे आचमन करावै ॥ (अनन्त०) इस करके और (यत्पुरु०) इन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दो मंत्रोंसे स्नान करावै ॥ फिर पंचामृतसै स्नान करावै ॥ (सुरभेस्तु०) और (आप्याय०) इन दो मंत्रोंकरकै दूधसै स्नान करावै ॥ (चन्द्रमंडल०) और (दधिक्रा०) इन दो मंत्रों करकै दहीसै

ण्डलसंकाशंसर्वदेवप्रियंहियत् ॥ ददामिदधिदेवेशस्नानार्थंप्र० ॥ दधिक्रा ०ण्णो०॥ दधिस्नानम्०॥ आज्यंसुराणामा०॥ आज्यंपवित्रंपरमंस्नानार्थंप्रति गृह्यताम् ॥ घृतंमिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्वस्यधाम ॥ अनु० ॥ घृतस्नानम्०॥ सर्वौषधिसमुत्पन्नंपीयूषसदृशंमधु ॥ स्नानायतेमयादत्तंगृहा-णपरमेश्वर॥मधुवाता०मधु०॥इक्षुदण्डसमुद्भूतांशर्करांमधुराशुभाम् ॥ स्ना

स्नान करावै ॥ (आज्यं०) और (आज्यंपवित्रं०) और (घृतंमिमिक्षे०) इत्यादि तीन मंत्रों करकैं घृत (घी) सै स्नान करावै ॥ (सर्वौषधि०) और (मधु०) इन मंत्रोंसे मधुपर्कदे (इक्षुदं०) और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(स्वादुः०) इन करकै पवित्रजलसे स्नान करावै ॥ नाम मंत्रोंसे पहलीही रीतिसै नामपूजा करै ॥

नाय तेमयादत्तांगृहाणपरमेश्वर ॥ स्वादुःपवस्वेतिशर्करा०॥शुद्धोदकस्नानम्० ॥ नाममन्त्रैःपूर्वपूजांकुर्यात् ॥ पुरुषसूक्तेनअभिषेकः ॥ तप्तकाञ्चनवर्णाभंकौशेयंचसुनिर्मितम् ॥ वस्त्रंगृहाणदेवेशलक्ष्मीयुक्तनमोस्तुते ॥ तंयज्ञं०वस्त्रम्० ॥ वस्त्रानन्तरमाचम० ॥ दामोदरनमस्तेस्तुत्राहिमांभवसागरात् ॥ ब्रह्मसूत्रंसोत्तरीयंगृहाणपुरुषोत्तम ॥ तस्माद्यज्ञा० ॥ यज्ञोप० ॥ यज्ञोपवीतानन्तरमाचमनीयम् ॥श्रीखण्डं०॥तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत०॥चन्दनम् ॥अक्षताश्चसु०॥

(पुरुषसूक्तसे अभिषेक करै ॥ (तप्तकांचन०) और (तंयज्ञं०) इनसैं वस्त्र दे वस्त्रदेकर आचमन करावै (दामोदर०) और (तस्माद्यज्ञात्स०) इनसै यज्ञोपवीतदे ॥ जनेऊदेकर आचमन करै ॥ (श्रीखं०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और (तस्मा०) इनसै चन्दन चढावै ॥ (अक्षता०) इससै चावल चढावै ॥ (माल्यादीनि०) और (तस्मा०) इनसै फूल चढावै ॥ अब गांठोंके पूजै ॥ (श्रियै) यहांसे लेकर (सर्व मंगलायै०) इहां

अक्षतान्० ॥ माल्यादीनिसुगन्धीनि० ॥ तस्माद्श्वा०॥ पुष्पाणि० ॥ अथ ग्रन्थिपूजा ॥ श्रियै० ॥ मोहिन्यैन०॥ पद्मिन्यै०॥ महाबलायै०॥ अजायै०॥ मङ्गलायै०॥ वरदायै०॥ शुभायै०॥ जयायै०॥ विजयायै०॥ जयन्त्यैनमः॥ ॥ पापनाशिन्यै०॥ विश्वरूपायै० ॥ सर्वमङ्गलायै० ॥ १४ ॥ इतिग्रन्थि पूजा ॥ अथाङ्गपूजा ॥ मत्स्यायनमः ॥ पादौपूजयामि ॥ कूर्मायन० ॥ गुल्फौ

तलक ग्रंथिपूजा मूलमें देखकर करलेनी चाहिये ॥ इति ग्रंथिपूजा समाप्त हुई ॥ फिर अंग पूजा करै ॥ (मत्स्याय०) यहांसे लेकर(श्रीमद०) यहांतक सब अंगकी पूजा मूलमेंही देखकर कर-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लो ॥ अब आवरणकी पूजा करो ॥ (अनन्तस्य०) यहांसें लेकर और (दयाऽधेत्रा०) इस मंत्रतक

पू० ॥ वराहाय० ॥ जानूनी० ॥ नारसिंहाय० ॥ ऊरूपू० ॥ वामनाय० ॥ कटीपू० ॥ रामाय० ॥ उदरंपूजयामि ॥ श्रीरामाय० ॥ हृदयंपू० ॥ कृष्णाय० ॥ मुखंपू० ॥ सहस्रशिरसे० ॥ शिरपूः० ॥ श्रीमदननन्ताय० ॥ सर्वाङ्गंपू० ॥ अथावरणपूजा ॥ अनन्तस्यदक्षिणपार्श्वेरमायै० ॥ वामपार्श्वे भूम्यै० ॥ इतिप्रथमावरणम् ॥ आवरणदेवतामावाह्यहस्तंप्रक्षाल्य गन्धपुष्पं तर्जनीमध्यमाङ्गुष्ठैर्धृत्वा ॥ मध्येशङ्खोदकंगृहीत्वामन्त्रान्तेशङ्खोदकंभूमौनिक्षिप्यपुष्पंदेवोपरिनिक्षिपेत् ॥ दयाऽधेत्राहिसंसारसर्पान्माशरणागतम् ॥ भ

पांचो आवरणोंकी पूजा मूलमें देखकर यथाक्रम करलेनी ॥ पूर्वादिक क्रमकरके (अनन्ताय०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्यासमर्पयेतुभ्यंप्रथमावरणार्चनम् ॥ इतिमन्त्रमुच्चार्यजलंत्यक्त्वापुष्पंदेवो परिन्यसेत् ॥ एवमग्रेपि ॥१॥ पूर्वादिक्रमेण ॥ कृच्छ्रोल्काय०॥ महोल्काय०॥ शतोल्काय० ॥ सहस्रोल्काय० ॥ दयाब्धेत्रा० ॥ द्वितीयावरणार्चनम् ॥ २ ॥ तथैव वासुदेवाय० ॥ संकर्षणाय०॥ प्रद्युम्नाय०॥ अनिरुद्धाय० दयाब्धे० ॥ तृतीयावरणार्चनम् ॥ ३ ॥ प्राच्याम् ॥ केशवा०॥नारा यणा०॥ माधवा०॥ गोविन्दा० ॥ मधुसूदना० ॥ त्रिविक्रमा०॥ वाम ना०॥ श्रीधराय० ॥ हृषीकेशाय०॥ पद्मनाभाय०॥ दामोदरा० दयाब्धे०॥ चतुर्थावरणार्चनम् ॥ ४ ॥ पूर्वादिक्रमेण ॥ मत्स्या०॥ कूर्माय०॥ वराहाय०॥ नारसिंहायनमः॥ वामनायनमः॥ रामायनमः॥श्री

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रामायनमः ॥ कृष्णाय० ॥ बौद्धाय० ॥ कल्किने० ॥ अनन्तायनमः ॥ वि
श्वरूपिणेन० ॥ दयाब्धेत्रा० ॥ पञ्चमावरणार्चनम् ॥ ५ ॥ ॥ पूर्वादि
क्रमेण ॥ अनन्तायनमः ॥ दक्षिणायां ब्रह्मणेनमः ॥ पश्चिमायांवायवेन
मः॥ उत्तरायां ईशानाय० ॥ आग्नेय्यांवारुण्यैनमः ॥ नैर्ऋत्यां गायत्र्यैनमः ॥
वायव्यां भारत्यैनमः ॥ ईशान्यां गिरिजायैनमः ॥ अग्रेगरुडायनमः ॥ वामे-
सुपुण्यायनमः ॥ दयाब्धेत्राहि० ॥ षष्ठमावरणार्चनम् ॥ ६ ॥ ॥ पूर्वादिक्र
मेण ॥ इन्द्रायनमः ॥ अग्नयेनमः ॥ यमायनमः ॥ निर्ऋतयेनमः ॥ वरुणाय
नमः ॥ वायवेनमः ॥ सोमायनमः ॥ ईशानायनमः ॥ दयाब्धेत्रा० ॥ सप्तमा
व०॥७॥आग्नेय्यां शेषायनमः॥नैर्ऋत्यां विष्णवेनमः॥वायव्यां विधयेनमः॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ईशान्यांप्रजापतयेनमः॥ दयाब्धेत्राहि०॥अष्टमावरणार्चनम्॥८॥आग्नेय्यां
गणपतये०॥नैर्ऋत्यांसप्तमातृभ्योनमः॥वायव्यांदुर्गायैनमः॥ ईशान्यांक्षेत्रा
धिपतये०॥ दयाब्धेत्रा०॥ नवमावरणा० ॥ ९ ॥ मध्येब्रह्मणे० ॥ भास्करा
य० ॥ शेषाय०॥ सर्वव्यापिने०॥ ईश्वराय०॥ विश्वरूपायनमः॥महाकाया
यनमः ॥ सृष्टिकर्त्रेनमः ॥ कृष्णायनमः ॥ हरयेनमः ॥ शिवायनमः ॥
स्थितिकारकायनमः ॥ अन्तकायनमः ॥ दयाब्धेत्राहिसं० ॥ दशमावणार्च
नम् ॥ १० ॥ शौरयेनमः ॥ वैकुण्ठायनमः ॥ महाबलायनमः ॥ पुरुषोत्तमा
यनमः ॥ अजायनमः ॥ पद्मनाभायनः ॥मङ्गलायनमः ॥ हृषीकेशायनमः
वरदायनमः ॥ माधवायनमः ॥ मधुसूदनायनमः ॥ अच्युतायनमः ॥ अन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्तायनमः ॥ गोविन्दायनः ॥ विजयायनमः ॥ अपराजितायनमः ॥ कृष्णा
यनमः ॥ दयाब्धेत्राहिसं० ॥ एकादशावरणार्चनम् ॥ ११ ॥ अनन्तायनमः ॥
कपिलायनमः ॥ शेषायनमः ॥ संकर्षणायनमः ॥ हलायुधायनमः ॥ तारणाय
नमः ॥ सीरपाणयेनमः ॥ बलभद्रायनमः ॥ दयाब्धेत्राहिसं० ॥ द्वादशावर
णार्चनम् ॥ १२ ॥ क्षीराब्धिशायिनेनमः ॥ अच्युतायनमः ॥ भूम्याधारायनमः ॥
लोकनाथायन० ॥ फणामणिविभूषणाय० ॥ सहस्रमूर्धेनमः ॥ सहस्रार्चिषेन० ॥
दयाब्धेत्राहिसं० ॥ त्रयोदशावरणार्चनम् ॥ १३ ॥ केशवादिचतुर्विंशतिनाम
भिः ॥ दयाब्धेत्राहिसंसा० ॥ चतुर्दशावरणार्चनम् ॥ १४ ॥ ॥ अथपत्रपूजा ॥

इत्यादिक मंत्रोंकरके और (दयाब्धे०) यहांतकके मंत्रोंसे मूलमें देखकर चौदह आवर्णोंकी पूजा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ कृष्णाय० ॥ पलाशपत्रं० ॥विष्णवेनमः॥औदुंबरपत्रंसमर्पयामि॥हरये० ॥ अश्वत्थपत्रंसमर्पयामि॥शंभवेनमः॥ भृङ्गिराजपत्रंसमर्पयामि॥ब्रह्मणेनमः॥ जटाधारपत्रंसमर्पयामि॥भास्कराय० ॥ अशोकपत्रंसमर्पयामि॥शेषायनमः ॥ कपित्थपत्रंसमर्पयामि ॥ सर्वव्यापिनेनमः ॥ वटपत्रंसमर्पयामि॥ ईश्वराय नमः ॥ आम्रपत्रंसमर्पयामि ॥ विश्वरूपिणे० ॥ कदलीपत्रंसम० ॥ महाकाया यनमः ॥ अपामार्गपत्रंसमर्पयामि ॥ सृष्टिकर्त्रे० ॥ करवीरपत्रंसमर्पयामि ॥ स्थितिकर्त्रेनमः ॥ पुन्नागपत्रंसमर्पयामि ॥ अन्तकायनमः ॥ नागवल्लीपत्रं समर्पयामि ॥ ॥अथपुष्पपूजा॥ ॥ अनन्तायनमः ॥ पद्मपुष्पंसमर्पयामि ॥

यथाक्रमसे करलेनी योग्यहै ॥ अब फिर पत्रपूजा करै ॥ (कृष्णायनमः) यहांसे लेकर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(अंतकाय०) तक पत्रको पूजै ॥ फिर पुष्पोंकी पूजा करै ॥ (अनंताय०) यहांसे लेकर विष्णवेनमः ॥ जातिपुष्पंसमर्पयामि ॥ अव्ययायनमः ॥ कल्हारपुष्पंसमर्पयामि ॥ सहस्रजितेनमः ॥ केतकीपुष्पंसमर्पयामि ॥ २॥ अनंतरूपिणे नमः ॥ बकुलपुष्पंसमर्पयामि ॥ इष्टायनमः ॥ शतपुष्पंसमर्पयामि ॥ विशिष्टायनमः॥पुन्नागपुष्पंसम०॥शिष्टेष्टाय०॥करवीरपुष्पंस०॥शिखण्डिने०॥ धत्तूरपुष्पंसम० ॥ नहुषाय० ॥ कुन्दपुष्पंसमर्पयामि ॥ विश्वबाहवेनमः ॥ मल्लिकापु० ॥ महीधरायनमः ॥ मालतीपुष्पंसम०॥ अच्युताय०॥ कर्णिकापुष्पंसमर्पयामि ॥ अन्तकायनमः ॥ कदलीपुष्पंसमर्पयामि ॥ १४ ॥ अथाऽष्टोत्तरशतनामभिःपूजयेत् ॥ अनन्तायनमः ॥ अच्युतायनमः ॥ अद्भुत

(अंतकाय०) यहांतक पुष्पपूजा करके फिर एकसै आठ (१०८) नामोंकी पूजा करै ॥ (अनन्ता

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कर्मणेनमः ॥ अमितविक्रमायनमः ॥ अपराजितायनमः ॥ अखण्डायनमः ॥ अग्निनेत्रायनमः ॥ अग्निवपुषेनमः ॥ अदृश्यायनमः ॥ अत्रिपुत्रायनमः ॥ १० ॥ अनन्तकुलायनमः ॥ अनाशिनेनमः ॥ अनघायनमः ॥ अब्दुनीलायनमः ॥ अहरहायनमः ॥ अष्टमूर्तयेनमः ॥ अनिरुद्धायनमः ॥ अनिर्विष्टायनमः ॥ अचञ्चलायनमः ॥ शब्दातिगाय० ॥ २० ॥ अचलरूपायनमः ॥ अखिलधरायनमः ॥ अव्यक्तायनमः ॥ अनुरूपायनमः ॥ अभयङ्करायनमः ॥ अक्षतायनमः ॥ अवपुषेनमः ॥ अयोनिजायनमः ॥ अरविन्दायनमः ॥ अशनवर्जितायनमः ॥ ३० ॥ अधोक्षजायनमः ॥ अदितिपुत्रायनमः ॥ अम्बिकापतिपूर्वजायनमः ॥ अपस्मारनाशिनेनमः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अव्ययायनमः ॥ अनादयेनमः ॥ अप्रमेयायनमः ॥ अघशत्रवेनमः ॥ अम-
रारिघ्नायनमः ॥ अनीश्वरायनमः ॥ ४०॥ अजायनमः ॥ अघोरायनमः ॥
अनादिनिधनायनमः ॥ अमरप्रभवेनमः ॥ अग्राह्यायनमः ॥ अक्रूरायनमः
अनुत्तमायनमः ॥ अरूपायनमः ॥ अह्नेनमः ॥ अमोघाधिपतयेनमः ॥५०॥
अजायनमः ॥अक्षमायनमः ॥ अमृतायनमः ॥ अघोरवीर्यायनमः ॥ अ
व्यङ्गायनमः ॥ अविघ्नायनमः ॥ अतीन्द्रियायनमः ॥ अमिततेजसेनमः ॥
अमितयेनमः ॥ अष्टमूर्तयेनमः ॥ ६० ॥ अनिलायनमः ॥ अवज्ञायनमः
अणोरणीयसेनमः ॥ अशोकायनमः ॥ अरविन्दाक्षायनमः ॥ अधिष्ठानाय
नमः ॥ अमितनयनायनमः ॥ अरण्यवासिनेनमः ॥ अप्रमत्तायनमः ॥ अ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नन्तरूपायनमः ॥ ७० ॥ अनलायनमः ॥ अनिमिषायनम ॥ अस्त्र
रूपायनमः ॥ अग्रगण्यायनमः ॥ अग्रामितायनमः ॥ अनन्तकायन
मः ॥ अचिन्त्यायनमः ॥ अपांनिधयेनमः ॥ अतिसुन्दरायनमः ॥ अमर
प्रियायनमः ॥८०॥ अष्टसिद्धिप्रदा०॥ अरविन्दप्रि०॥ अरविन्दा० ॥ अन
यायनमः ॥ अर्थायनमः ॥ अक्षोभ्यायनमः॥अर्चिष्मतेनमः॥ अनेकमूर्त
येनमः॥ अनन्तब्रह्माण्डपतयेनमः॥ अनन्तशयनायनमः ॥ ९० ॥ अमरा
धिपतयेनमः ॥ अनाधारायनमः ॥ अनन्तनाम्नेनमः ॥ अनन्तश्रियेनमः॥
अक्षरायनमः॥ अमायायनमः ॥ आश्रमस्थानायनमः ॥ आश्रमातीता
यनमः ॥ अन्नदायनमः ॥ आत्मयोनयेनमः ॥ १०० ॥ अवनीपतये

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(हिरण्य०) इससैं दक्षिणा चढावै ॥ (यानिकानि०) और (नाभ्या०) इनसैं प्रदक्षिणा करै (नमस्ते०)

लंस०॥ हिरण्यगर्भेतिदक्षिणाम्०॥ यानिकानिचपापानिजन्मान्तरकृतानि च॥तानितानिविनश्यन्तिप्रदक्षिणपदेपदे॥नाभ्याआसीदितिप्रदक्षिणाम्०॥ नमस्तेभगवन्भूयोनमस्तेधरणीधर ॥ नमस्तेसर्वनागेन्द्रनमस्तेमधुसूदन॥ सप्तास्येतिनमस्कारम् ॥ नमस्तेदेवदेवेशनमस्तेगरुडध्वज॥नमस्तेकमलाकान्तअनन्तायनमोनमः॥यज्ञेनयज्ञमितिमन्त्रपुष्पम्॥अथ दोरकप्रार्थना॥ अनन्तायनमस्तुभ्यंसहस्रशिरसेनमः ॥ नमोस्तुपद्मनाभायनागानांपतयेनमः ॥ अनन्तकामदःकामाननन्तोमेप्रयच्छतु ॥ अनन्तोदोररूपेणपुत्र

और (नमस्तेदेवदेवेश०) इनसैं नमस्कार करै ॥ (यज्ञेन०) इस मत्रोंसे पुष्प चढावै अब डोरेकी प्रार्थना

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करै ॥ (अनन्ताय०) और (अनन्तकामदः०) इत्यादि मंत्रोंसे डोरेकी प्रार्थनाकर डोरेको हाथमें

पौत्रान्प्रवर्धतु ॥ इतिप्रार्थ्यदोरकंगृहीत्वा ॥ ॥ अथदोरकबन्धनमन्त्रः ॥
अनन्तसंसारमहासमुद्रमग्नंसमभ्युद्धरवासुदेव ॥ अनन्तरूपेविनियोजय
स्वह्यनन्तसूत्रायनमोनमस्ते ॥ ॥ इतिबध्नीयात् ॥ ॥ जीर्णदोरक
विसर्जनमन्त्रः ॥ नमःसर्वहितानन्तजगदानन्दकारक ॥ जीर्णदोरममुंदे
वविसृजेहंत्वदाज्ञया ॥ ॥ इतिविसृजेत् ॥ ॥ अथवायनमन्त्रः ॥ ॥ गृ
हाणेदंद्विजश्रेष्ठवायनंदक्षिणायुतम् ॥ त्वत्प्रसादाददंदेवमुच्येयंकर्मबन्ध
नात् ॥ प्रतिगृह्णन्द्विजश्रेष्ठअनन्तफलदायक ॥ पक्वान्नफलसंयुक्तंदक्षिणाघृ

लेकर (अनन्तसंसार०) इस मंत्रसे डोरेको हाथमें बांधले ॥ (जीर्णदोरक०) इस मंत्रसे पुराने अन-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्तके डोरेको खोलडालै ॥ (गृहाणेदं०) और (पक्वान्न०) इन दो मंत्रोंसे श्रेष्ठ ब्राह्मणको वायनादेवै ॥

तसंयुतम् ॥ वायनंद्विजवर्यायदास्यामिव्रतपूर्तये ॥ ॥ अथजीर्णदोरकदान मन्त्रः ॥ अनन्तःप्रतिगृह्णातिअनन्तोवैददातिच ॥ अनन्तस्तारकोभाभ्या मनन्तायनमोनमः ॥ इतिदद्यात् ॥ ततोयथाशक्तिब्राह्मणान्भोजयेत् ॥ अने नकृतपूजनेनश्रीमदनन्तःप्रीयताम् ॥ ॥इति पूजाविधिःसमाप्तः ॥ ॥छ॥

(अनन्तः०) इस मंत्रसै जीर्णडोरेकोभी देदेवै फिर यथाशक्ति ब्राह्मणोंको जिमावै इस कर्मके करनेसे अनन्तदेव प्रसन्न होते हैं ॥ इति पूजाविधिः समाप्तः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ कथा—सूतजी बोलेकि पहले गंगाजीके किनारे जरासंधके मारनेके अर्थ धर्ममें तत्पर राजा यु-
धिष्ठिरने राजसूययज्ञ प्रारम्भ किया और तबही॥१॥श्रीकृष्णचन्द्र और भीम तथा अर्जुनके साथ राजा

अथकथा ॥ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ पुरातुजाह्नवीतीरेधर्मोधर्मपरायणः ॥ जरासंध
वधार्थायराजसूयमुपाक्रमत् ॥१॥ कृष्णेनसहधर्मोसौभीमार्जुनसमन्वितः ॥ य
ज्ञशालांप्रकुर्वीतनानारत्नोपशोभिताम् ॥ २ ॥ मुक्ताफलसमाकीर्णामिन्द्रालय
समप्रभाम् ॥ यज्ञार्थंभूपतीन्सर्वान्समानीयप्रयत्नतः ॥३॥ गान्धारीतनयोरा
जातदानींनृपनन्दनः ॥ दुर्योधनइतिख्यातःसमागच्छन्मखालयम् ॥ ४ ॥

युधिष्ठिरने अनेक रत्नोंसे शोभित यज्ञशाला सजाई ॥ २ ॥ मोतियोंसे भरी हुई इन्द्रभवनके सदृश यज्ञशा-
लाको बनाकर यज्ञके लिये सब राजओंको बुलाया ॥ ३ ॥ उसीसमय कुरुवंशोद्भव गांधारीके पुत्र राजा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दुर्योधन उस यज्ञशालामें आये ॥ ४ ॥ वहां उस सभाके आंगन स्थलको जलसमझकर वस्त्र ऊंचेकर राजा दुर्योधन हौले २ चलने लगे ॥५॥ दुर्योधनकी स्थलमें जलकीसमान बुद्धि जानकर द्रौपदीको आदिलेकर

दृष्ट्वादुर्योधनस्तत्रप्राङ्गणंजलसन्निभम् ॥ ऊर्ध्वंकृत्वातुवस्त्राणितत्रागच्छच्छनैःशनैः ॥ ५ ॥ स्मितवक्त्राश्चतंदृष्ट्वाद्रौपद्यादिवराङ्गनाः ॥ दुर्योधनस्ततोगच्छन्जलमध्येपपातह ॥ ६ ॥ पुनःसर्वेनृपाश्चैवऋषयश्चतपोधनाः ॥ उपहासंचचक्रुस्ताद्रौपद्यादिसुलोचनाः ॥ ७ ॥

सब सुन्दरस्त्रियें हँसने लगीं फिर राजा दुर्योधन आगे चलकर जलमें स्थलकीभ्रान्तिसे मोहित हो जलमें गिरगये ॥ ६ ॥ फिर तौ राजा और तपोधन ऋषिलोग और द्रौपदी आदि सुन्दरनेत्रोंवाली सम्पूर्णस्त्रियें

१ राजायुधिष्ठिर इनका सुयोधननाम कहा करतेथे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

खूब बांधकर और पिटारेमें धरकर भोजनसे बाकी बचे भोजनको रस्तेकेलिये देकर जामातसैं बोली कि अब तुम अपने घर चलेजाओ ॥ ४७ ॥ और यहभी कहा देखलो घरमें कुछभी द्रव्य नहीं है हे

पेटकेसुस्थिरंबद्ध्वास्वगृहंगम्यतामिति ॥ भोज्यावशिष्टचूर्णेनपाथेयंचचकारसा ॥४७॥ उवाचवित्तंनैवास्तिगृहेपश्ययदिस्थितम् ॥तच्छ्रुत्वाविमनाःपार्थसंयतात्मामुनिस्तदा ॥ ४८ ॥ कौण्डिन्योपिविवाह्यैनांपथिगच्छन्शनैःशनैः ॥ शीलांसुशीलामादायनवोढांगोरथेनहि ॥ ४९ ॥ ददर्शयमुनांपुण्यांतामुत्तीर्यतटेरथम् ॥ संस्थाप्यावश्यकंकर्तुंगतःशिष्यान्नियुज्यवै ॥ ५० ॥

राजन्! यह सुनकर मनमें दुःखी होते हुए आत्मज्ञानी मुनिराज ॥४८॥ कौण्डिन्यभी सुन्दरस्वभाववाली शीलाका विवाह कर बैलगाडीमें बैठकर हौले२रस्तेमें आये॥४९॥पवित्र यमुनाको देखकर उसके किनारे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

में रथको खडाकर उस रथमेंसे शीलाको उतार शिष्योंको वहां बैठालकर कौण्डिन्य नित्यकृत्य करने को चले गये ॥ ५० ॥ दुपहरके भोजन करनेके समय नदीके किनारे रथसे उतर शीलाने लालवस्त्र धार

मध्याह्नेभोज्यवेलायांसमुत्तीर्यसरित्तटे ॥ ददर्शशीलासास्त्रीणांसमूहंरक्तवासासाम् ॥५१॥ चतुर्दश्यामर्चयन्तंभक्त्यादेवंजनार्दनम् ॥ उपगम्यशनैःशीलापप्रच्छस्त्रीकदम्बकम् ॥५२॥ आर्या किमेतन्मेब्रूतकिन्नामव्रतमीदृशम् ॥ ताऊचुर्योषितस्तांतुशीलांशीलविभूषणाम् ॥ ५३ ॥

ण करेहुए स्त्रीयोंके समूहको देखा ॥५१॥ भक्तिकरके चतुर्दशीके दिन विष्णु भगवान्की पूजा करतेहुए स्त्रियोंके समूहके धोरे शीलाने हौले२ जाकर पूछा ॥५२॥ शीला बोली हे सौभाग्यवतीयों ? कहो तौ इस व्रतका क्या नाम है, यह सुनकर वे स्त्रियें शीलहीहै भूषण जिसका ऐसी शीलासै बोलीं ॥ ५३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यह अनन्तका व्रतहै इस व्रतमें अनन्तदेवका पूजनहोताहै. यह सुनकर शीला बोली इस उत्तम व्रतको मैंभी करूंगी ॥ ५४ ॥ और इस व्रतकी क्या विधिहै और क्या दान दिया जाताहै और किस

अनन्तव्रतमेतद्धिव्रतेनन्तस्तुपूज्यते ॥ साब्रवीदहमप्येतत्करिष्येव्रतमुत्तम म् ॥ ५४ ॥ विधानंकीदृशंतत्रकिंदानंकोत्रपूज्यते ॥ ॥ स्त्रियऊचुः ॥ ॥ शी लेसदन्नप्रस्थस्यपुंनाम्नासंस्कृतस्यच ॥ ५५ ॥ अर्धंविप्रायदातव्यमर्धमात्म निभोजनम् ॥ शक्त्याचदक्षिणांदद्याद्धित्तशाठ्यविवर्जितः ॥ ५६ ॥

देवताकी पूजा होती है यह सुन स्त्रियें बोलीं हे शीले ! एक सेर सुन्दर समेके चावल अच्छी पवित्रतासे बनाकर ॥ ५५ ॥ उसमेंसैं आधा तौ ब्राह्मणको देदे और आधा आप खाले धनकी शठताको छोड कर अपनी शक्त्यनुसार दक्षिणादे ॥ ५६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अनन्तदेवका पूजन सदा नदीके किनारेपर करना चाहिये कुशाके शेषजी बनाकर वंशपात्र (बांसकी टोक) रीमें स्थापित करै ॥ ५७ ॥ स्नान करकै और दीपक सुगंधित पुष्प धूप मिष्टान्न अनेक २ पक्के

कर्तव्यंचसरित्तीरेसदानन्तस्यपूजनम् ॥ शेषंकुशमयंकृत्वावंशपात्रेनिधायच ॥ ५७ ॥ स्नात्वानन्तंसमभ्यर्च्यमण्डलेगन्धदीपकैः॥ पुष्पैर्धूपैश्चनैवेद्यैर्नानापक्वान्नसंयुतैः ॥ ५८ ॥ तस्याग्रतोदृढंन्यस्यकुङ्कुमाक्तंसुदोरकम् ॥ चतुर्दशग्रन्थियुतंगन्धाद्यैरर्चयेच्छुभैः ॥ ततस्तुदक्षिणेपुंसांस्त्रीणांवामेकरेन्यसेत् ॥ ५९ ॥

फलौंसे अनन्त देवका पूजन कर ॥ ५८ ॥ उसके समीप चौदह (१४) गांठौंवाले मजबूत लाल डोरेको रखकर शुभ मंत्रोंसे पूजन करकै फिर पुरुषोंके दक्षिणा (दाहिने) और स्त्रियोंके बायें हाथमें बांधदे ॥ ५९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे वासुदेव ! अनन्त संसार रूपी इस समुद्रसै मुझ डूबतेहुएको तुम उद्धारकरो । अनन्तरूप होकर इस डोरेमैं प्रवेश हो ऐसे अनन्तरूप इस सूत्र (डोरा) के अर्थ नमस्कार है ॥ ६० ॥ इस मंत्रसे अनन्तका

अनन्तसंसारमहासमुद्रमग्नंसमभ्युद्धरवासुदेव ॥ अनन्तरूपेविनियोजयस्वह्य
नन्तसूत्रायनमोनमस्ते ॥ ६० ॥ अनेनदोरकंबद्ध्वाकथांश्रुत्वाहरेरिमाम् ॥ ध्या
त्वानारायणंदेवमनन्तंविश्वरूपिणम् ॥ ६१ ॥ भुक्त्वाचान्तेव्रजेद्वेश्मभद्रेप्रोक्तं
व्रतंतव ॥ ॥ कृष्णउवाच ॥ ॥ एवमाकर्ण्यराजेन्द्रप्रहृष्टेनान्तरात्मना ॥६२॥

पूजन कर वह डोरा हाथमें बांधले और विष्णुभगवानकी पवित्र कथाको सुनकर और अनन्तस्वरूप विष्णुभगवानका ध्यान करता हुआ ॥ ६१ ॥ पीछेसे भोजन कर अपने घरको चला जाय हे सुभगे ! यह अनन्तके व्रतकी विधिहै । इसतरह स्त्रियोंकी कथाको सुनाकर श्रीकृष्णबोले हे नृपसत्तम युधिष्ठिर ! इस

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रकार व्रतकी विधिको सुन प्रसन्नचित्त होकर ॥ ६२ ॥ उस शीलानेभी व्रतको करके हाथमें डोरा बांधा और उस रस्तेके भोजनमेंसे आधा ब्राह्मणको देकर आपभी खाकर ॥ ६३ ॥ फिर प्रसन्न

सापिचक्रेव्रतंशीलाकरेबध्वासुदोरकम् ॥ पाथेयमर्धंविप्रायदत्त्वाभुक्तास्वयंत तः ॥ ६३ ॥ पुनर्जगामसंहृष्टागोरथेनस्वकंगृहम् ॥ भर्त्रासहैवज्ञनकैःप्रत्यय स्तत्क्षणादभूत् ॥ ६४ ॥ तेनानन्तव्रतेनास्यबभौगोधनसंकुलम् ॥ गृहाश्रमंश्रि यायुष्टंधनधान्यसमन्वितम् ॥ ६५ ॥

होती हुई बैल गाडीमें बैठ अपने पतिके साथ घरको गमन किया तभीसे उसे स्वामीके साथही विश्वास होगया ॥ ६४ ॥ उस अनन्तव्रतके प्रभावसे इसका घर गौ और लक्ष्मी धन और धान्यसे युक्त ॥ ६५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सदां अतिथियोंके पूजनसे भरा हुआ होगया और वह शीलाभी मणियोंकी तगडी पहरे मोतियोंके हारोंसे शोभित ॥ ६६ ॥ देवस्त्रियोंके समानरूपवाली सरस्वतीकी समान शोभित होती हुई आनन्ददेनेवालाहै स्वरू-

आकुलंव्याकुलंरम्यंसर्वदातिथिपूजनैः ॥ सापिमाणिक्यकाञ्चीभिर्मुक्ताहारै
र्विभूषिता ॥ ६६ ॥ देवाङ्गनेवसंपन्नासावित्रीप्रतिमाभवत् ॥ विचचारगृहे
भर्तुःसमीपेसुखरूपिणी ॥ ६७ ॥ कदाचिदुपविष्टायादृष्टोबद्धःसदोरकः ॥
शीलायाहस्तमूलेतुभर्त्रातस्याद्विजन्मना ॥ ६८ ॥ किमिदंदोरकंशीलेममव
श्यायकल्पितम् ॥ धृतंसुदोरकंत्वेतत्किमर्थंब्रूहितत्त्वतः ॥ ६९ ॥

प जिसका ऐसी पतिके सामने घरमें फिरनेलगी ॥ ६७ ॥ एक समय बैठी हुई उस शीलाके हाथमें बँधेहुए उस डोरेको देखकर उसका पति वह ब्राह्मणबोला ॥ ६८ ॥ हे शीले! यह डोरा कैसाहै और तूने क्यों बांधाहै

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्या तूने मुझे अपने वशमें करनेको बांधाहै यह तू मुझे बताव ॥ ६९ ॥ यह सुनकर शीला बोली हे स्वामिन् ! जिसकी कृपासे धनधान्यादि सम्पत्ति मनुष्य पाते हैं उस अनन्तदेवकी मैंने धारणा करीहै ॥ ७० ॥ हे

॥ शीलोवाच ॥ ॥ यस्यप्रसादात्सकलाधनधान्यादिसंपदः॥लभ्यन्तेमानवै श्चापिसोनन्तोयंमयाधृतः ॥ ७० ॥ शीलायास्तद्वचःश्रुत्वाभर्त्रातेनद्विजन्म ना॥ श्रीमदान्धेनकौरव्यसाक्षेपंत्रोटितस्तदा ॥ ७१ ॥ कोनन्तइतिमूढेन जल्पतापापकारिणा॥ क्षिप्तोज्वालाकुलेवह्नौहाहाकृत्वाप्रधावती ॥ ७२ ॥

युधिष्ठिर ! इस प्रकार शीलाके वचन सुनकर उस श्रीके मदसे अंधे हुए ब्राह्मणने उस डोरेको झटका देकर तोड डाला ॥ ७१ ॥ अनन्त कौन होताहै ऐसे उस मूर्खपापीने कहकर प्रज्वलित अग्निमें उस डोरेको डाल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिया ॥ ७२ ॥ हाय २ करके रोती हुई उस शीलाने दाड़करै जलते हुए डोरेको आगसैं निकाल दूधमें डाल दिया उस दुष्कर्मके करनेसे उसकी सब श्री नष्ट होगई ॥ ७३ ॥ गौ और धन तौ चौरोंने चुरालिया, घरमें आग

शीलागृहीत्वातत्सूत्रंक्षीरमध्येसमाक्षिपत् ॥ तेनकर्मविपाकेनसाश्रीस्तस्य क्षयंगता ॥ ७३ ॥ गोधनंतस्करैर्नीतंगृहंदग्धंधनंगतम् ॥ यद्यथैवागतंगेहे तत्तथैवपुनर्गतम् ॥ ७४ ॥ स्वजनैःकलहोनित्यंबन्धुभिस्ताडनंतथा ॥ अनन्ताक्षेपदोषेणदारिद्र्यंपतितंगृहे ॥ ७५ ॥

लगगई, जिस प्रकार आयाथा उसीप्रकार सब कुछ चलागया ॥ ७४ ॥ भाई और जातिके आदिमियोंसे रोज २ मार पीट और क्लेश लड़ाई होनेलगी । अनन्त तोड़नेके दोषसैं सब दरिद्रता घरमें आगई ॥ ७५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नकश्चिद्वदतेलोकस्तेनसार्द्धंयुधिष्ठिर ॥ शरीरेणातिसंतप्तोमनसाप्यतिदुः
खितः॥ ७६॥ निर्वेदंपरमंप्राप्तःकौण्डिन्यःप्राहतांप्रियाम्॥ ॥ कौण्डिन्यउ
वाच॥ ॥शीलेममेदमुत्पन्नंसहसाशोककारणम्॥७७॥ येनातिदुःखमस्माकं
जातःसर्वधनक्षयः॥ स्वजनैःकलहोगेहेनकश्चिन्मांप्रभाषते॥ ७८॥ शरीरे
नित्यसंतापःखेदश्चेतासिदारुणः॥ जानासिदुर्नयःकोत्राकिंकृत्वासुकृतंभवेत्७९

हे युधिष्ठिर! कोई मनुष्य उसकेसाथ बातभी न करै तब वह ब्राह्मण मनसे और देहसे बड़ा दुःखित होताहुआ ॥ ७६ ॥ अत्यन्त पीडाको पाकर निर्वेद हो वह कौंडिन्य अपनी स्त्रीसे बोला। हे प्रिये! यह दुःखका कारण अकस्मात्ही कहांसे उत्पन्न होगया ॥७७॥ जिससे हम बहुत दुःखि होतेहैं और सब धनभी नष्ट हो गया भाई बंधुओंसे घरमें रोज लडाई होतीहै और कोई मुझसे बोलताभी नहीं ॥ ७८ ॥ शरीरमेंभी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रोज संतापहै चित्तमें अत्यन्त खेदहै तूं कुछ जानतीहै कौनसे सुकृतसे इस दुःखका नाश होगा ॥ ७९ ॥
यह वचन सुनकर सुन्दरस्वभाववाली शीलसैं मंडित वह शीला बोली । मैं जानतीहूं कि यह अनन्तके

प्रत्युवाचाथतंशीलासुशीलाशीलमण्डना॥ ॥शीलोवाच॥ ॥ प्रायोनन्त
कृताक्षेपपापसंभवजंफलम्॥ ८० ॥ भविष्यतिमहाभागतदर्थंयत्नमाचर ॥
एवमुक्तःसविप्रर्षिर्जगाममनसाहरिम्॥८१॥निर्वेदान्निर्जगामाथकौण्डिन्यः
प्रयतोवनम्॥ तपसेकृतसंकल्पोवायुभक्षोद्विजोत्तमः ॥ ८२ ॥

तिरस्कार करनेके पापका फलहै ॥ ८० ॥ सो हे महाभाग! इस कारण आप इसका कुछ यत्न करिये
यह सुनकर वह ब्राह्मण मनसे विष्णुका ध्यान करनेलगा ॥ ८१ ॥ और निर्वेदको प्राप्तहो वनमें जाकर
इन्द्रियोंको जीत वायुभक्षण करताहुआ वह कौंडिन्य तप करनेलगा ॥ ८२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और उस सर्वव्यापी भगवान्को कहां देखूं ऐसा विचार करने लगा, जिसकी कृपासे धनादिक सुखके देनेवाले बहुतसे पदार्थ आये, और तिरस्कार करनेसे फिर चलेगये इस प्रकार विचार करता हुआ

मनसाध्यायचानन्तंकद्रक्ष्यामिचतंविभुम् ॥ यस्यप्रसादात्संजातमाक्षेपान्नि धनंगतम् ॥ ८३ ॥ धनादिकंममातीवसुखदुःखप्रदायकम् ॥ एवंसंचिन्तय न्सोथबभ्रामगहनेवने ॥ ८४ ॥ तत्रापश्यन्महाचूतंपुष्पितंफलितंद्रुमम् ॥ वर्जितंपक्षिसंघातैःकीटकोटिसमावृतम् ॥ ८५ ॥ तमपृच्छद्विजोनन्तःक्वचि द्दृष्टोमहातरो ॥ ब्रूहिसौम्यममातीवदुःखंचेतसिवर्तते ॥ ८६ ॥

उस बड़े वनमें फिरनेलगा ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ उस वनमें बहुतसे फलफूलोंसे युक्त और पक्षियोंसे रहित और बहुत प्रकारके कीड़ोंसे लिपटे हुए बडे भारी आमके वृक्षको देखा ॥ ८५ ॥ उस वृक्षको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और वृद्धब्राह्मणकारूप बनाकर उससे बोले कि तुम यहां हमारे धोरै आओ, और दाहिना हाथ पकड़कर उसको गुहामें लिवाकर लेगये ॥९९॥ तहां लेजाकर सुन्दरस्वरूपवती स्त्री और नरौंसै युक्त अपनी पुरी

वृद्धब्राह्मणरूपेणइतएहीत्युवाचतम् ॥ प्रगृह्यदक्षिणेपाणौगुहायांप्रविवेश तम् ॥ ९९ ॥ स्वांपुरींदर्शयामासदिव्यनारीनरैर्युताम् ॥ तस्यांनिविष्टमात्मानंदिव्यसिंहासनेशुभे ॥ १०० ॥ पार्श्वस्थशङ्खचक्राब्जगदागरुडशोभितम् ॥ दर्शयामासविप्रायविश्वरूपमनन्तकम् ॥ १०१ ॥

को दिखाया और सुन्दर पवित्र सिंहासनमें बैठे हुए अपनेशरीरको दिखाया ॥ १०० ॥ और पांचजन्यशंख, सुदर्शनचक्र, कमल, कौमोदकीगदा, गरुड इन करकै सहित उस ब्राह्मणको अपना विश्वरूप अनन्तस्वरूप दिखाया ॥ १०१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और विभूतियोंसे अनेक प्रकारकरकै शोभित और अत्यन्त पराक्रमयुक्त कौतुभमणीसे प्रकाशमान वनमालाओंको धारण करे हुए उस ब्राह्मणको अपनास्वरूप दिखाया ॥ १०२ ॥ उन देवताओंके

विभूतिभेदैश्चानन्तैराजन्तममितौजसम् ॥ कौस्तुभेनविराजन्तंवनमालावि
भूषितम् ॥ १०२ ॥ तंदृष्ट्वादेवदेवेशमनन्तमपराजितम् ॥ वन्दमानोजगा
दोच्चैर्जयशब्दपुरःसरम् ॥ १०३ ॥ पापोहंपापकर्माहंपापात्मापापसंभवः ॥
त्राहिमांपुण्डरीकाक्षसर्वपापहरोभव ॥ १०४ ॥

ईश्वर अजित अनन्त भगवान्को देखकर प्रणाम करकै वह ब्राह्मण आपकी जयहो यह बडी जोरसै बोला ॥ १०३ ॥ हे कमलसदृशनेत्रवाले ! पापरूपभी मैंहीं हूं पापका करनेवालाभी मैंहीं हूं पापात्मा भी मैंही हूं और पापहीसे पैदा हुआहूं इसी कारणसैं हे सब पापोंके दूरकरनेवालों आप मेरी रक्षा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करिये मैं आपकी शरण हूं ॥ १०४ ॥ हे भगवन् ! जो मेरा शिररूपी भौंरा आपके चरणकमलमें भ्रम
नेलगा इसीसे मेरा जन्म और जीवन आज सफल हुआ ॥ १०५ ॥ यह सुनकर देवताओंके ईश्वर अ

अद्यमेसफलंजन्मजीवितंचसुजीवितम् ॥ यत्तवाङ्घ्र्यब्जयुगुलेमन्मूर्धाभ्रम
रायते ॥ १०५ ॥ तच्छ्रुत्वानन्तदेवेशःप्राहसुस्निग्धयागिरा ॥ माभैस्त्वंब्रूहि
विप्रेन्द्रयत्तेमनसिवर्तते ॥ १०६ ॥ ॥ कौण्डिन्यउवाच ॥ ॥ मयाभूत्यवलि
तेनत्रोटितोनन्तदोरकः ॥ तेनपापविपाकेनभूतिर्मेप्रलयंगता ॥ १०७ ॥

नन्तदेव मनोहर वाणीसे बोले हे ब्राह्मणोंमे श्रेष्ठ! तूं भय मत करै जो तेरे मनमें हैं सो कह ॥ १०६ ॥ तब
यह सुनकर वह कौंडिन्य बोला स्वामिन्! मैंने धनके अहङ्कारसे अनन्तका डोरा तोड डालाथा सो इसी
पापसे मेरा सब ऐश्वर्य्य नष्ट होगया ॥ १०७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

घरमें रोज लड़ाई क्लेश होताहै और कोई मुझसे बोलताभी नहीं जब मैं दुःखसे निर्वेद (व्याकुलता) को प्राप्त हो वनमें आपके दर्शनकी इच्छासे आया ॥ १०८ ॥ तब हे देवताओंके ईश्वर! कृपा करके

स्वजनैःकलहोगेहेनकश्चिन्मांप्रभाषते ॥ निर्वेदाद्गमितेरण्येतवदर्शनकाङ्क्षया ॥ १०८ ॥ कृपयादेवदेवेशत्वयात्मासंप्रदर्शितः ॥ तस्यपापस्यमेशान्तिं कारुण्याद्वक्तुमर्हसि ॥ १०९ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ तच्छ्रुत्वानन्तदेवेशउवाचद्विजसत्तमम् ॥ भक्त्यासंतोषितोदेवःकिंनदद्याद्युधिष्ठिर॥ ११० ॥

आपनें अपना दर्शनदिया सो अब आप मेरे ऊपर कृपाकर उस पापकी शान्तिका उपाय कहिये और कारण भी बताइये॥ १०९ ॥इतनी कथा सूनाय श्रीकृष्णचन्द्रजी बोले हे युधिष्ठिर! उस ब्राह्मणके यह वचन सुनकर विष्णुभगवान् बोले कि अनन्तभगवान् प्रसन्नहोकर क्या नहीं दे देतेहैं अर्थात् सभी कुछ दे देतेहैं ११०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तब अनन्तजी बोले हे कौण्डिन्य! तूं देर मत करै जल्दीसैं अपने घर जाकर बडीभक्तिपूर्वक चौदह वर्षतक अनन्तका व्रत कर ॥ १११ ॥ सारे पापोंसे छूटकर उत्तम सिद्धिको पावैगा। और बेटे पोतों

॥ अनन्तउवाच ॥ ॥ स्वगृहेगच्छकौण्डिन्यमाविलम्बंकुरुद्विज ॥ चरान न्तव्रतंभक्त्यानववर्षाणिपञ्चच ॥ १११ ॥ सर्वपापविशुद्धात्माप्राप्स्यसे सिद्धिमुत्तमाम् ॥ पुत्रपौत्रान्समुत्पाद्यभुक्त्वाभोगान्यथेप्सितान् ॥ ११२ ॥ अन्तेमत्स्मरणंप्राप्यमामुपैष्यस्यसंशयम् ॥ अन्यंचतेवरंदद्मिसर्वलोकोप कारकम् ॥ ११३ ॥

को उत्पन्नकरकै अनेक प्रकारके मनवांछित भोगोंको भोगकर ॥११२॥ मरते समय मेरा स्मरण करने सैं निःसन्देह मुझमेंही मिल जायगा, यहमैं औरभी सारे संसारका उपकार करनेवाला तुझको वर देता हूं॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो कोई शीला और अनन्तके आख्यानको सुनेगा और जो इस सुन्दर व्रतको करेगा ॥ ११४ ॥ वह बहुत जल्दी पापसे छूटकर मोक्षको पावैगा और हे ब्राह्मण ! तूं जिस मार्गसे आया है उसी मार्गसैं अपने

इदमाख्यानकवरंशीलानन्तव्रतादिकम् ॥ करिष्यतिनरोयस्तुकुर्वन्व्रत मिदंशुभम् ॥ ११४ ॥ सोचिरात्पापनिर्मुक्तःप्राप्नोतिपरमांगतिम् ॥ गच्छ विप्रगृहंशीघ्रंपथायेनागतोह्यसि ॥ ११५ ॥ ॥ कौण्डिन्यउवाच ॥ ॥स्वामिन् पृच्छामितेब्रूहिकिंचित्कौतूहलंमया ॥ अरण्येभ्रमताद्दष्टंतद्वदस्वजगद्गुरो ११६

घरको चलाजा ॥ ११५ ॥ यह सुनकर कौंडिन्य बोला हे स्वामिन् ! जो मैंने वनमे फिरते २ तमासा देखा सो मैं आपको सुनाता हूं आप कृपाकर बतलाइये हे जगत्केगुरु ! उसके सुननेकी मुझे बडी इच्छाहै ॥ ११६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह जो मैंने आमका वृक्ष देखाथा सो वह कौनथा और वह गौ कौनथी और वह वृषभ कौनथा कमल और कल्हारोंसे शोभित बहुत सुन्दर ॥ ११७ ॥ वनमें मैंने दो तलैयें देखी थीं, वह दौनों कौ

यश्चूतवृक्षःकस्तत्रकागौःकोवृषभस्तथा ॥कमलोत्पलकल्हारैःशोभितंसुमनो हरम् ॥ ११७ ॥ मयादृष्टंमहारण्येकिंतत्पुष्करिणीद्वयम् ॥ कःखरःकुञ्जरः कोसौकोसौवृद्धोद्विजोत्तमः ॥ ११८ ॥ ॥ अनन्तउवाच ॥ ॥ सचूतवृ क्षोविप्रोसौविद्यावेदविशारदः ॥ विद्यानदत्ताशिष्येभ्यस्तेनासौतरुतांगतः १९

नथीं, और गधा और वह हाथी कौनथा, और यह वृद्ध ब्राह्मण कौनथा ॥ ११८ ॥ यह सुनकर अनन्त भगवान् बोले वह आमका वृक्ष तौ सम्पूर्ण विद्याओंमें चतुर महापण्डित था इसने शिष्योंको विद्या नहीं पढाईथी, इसीकारणसे वह वृक्ष होगया ॥ ११९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और वह गौ बीजोंकी हरनेवाली उपरभूमिथीपहले उसने बीजहरथे और वह वृषभ धर्मथा घास में उपस्थित ॥१२०॥ जो तूने देखाथा वह धर्माधर्मका विचार नहीं करताथा इसीकारणसे वृषभ हुआ

यागौर्वसुंधरादृष्टापूर्वंसाबीजहारिणी ॥ वृषोधर्मस्त्वयादृष्टःशाद्वलेयःसमा स्थितः ॥१२०॥ धर्माधर्मव्यवस्थानंतच्चपुष्करिणीद्वयम् ॥ ब्राह्मण्यौकेचिदप्यास्तांभगिन्यौतेपरस्परम् ॥ १२१ ॥ धर्माधर्मादियत्किंचित्तेनिवेदयतो मिथः ॥ विप्रायनकचिद्दत्तमतिथौदुर्बलेपिवा ॥ १२२ ॥

और वह दौनो तलैयें जो देखींथीं वे ब्राह्मणी दौनो बहनेथीं ॥१२१॥ आपसमें जो कुछ धर्मअधर्मका हो यथावह सब आपही आपसमें बांटकर खालेथीं उन दौनोंने ब्राह्मण और अभ्यागत और दुर्बल १२२

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भिखारी इनको कुछभी नहीं दिया इसी पापसैं वे दौनों आपसमें लहरोंकी लंघारोंसे दुखी होतीहैं और उनका जल लहरोंके मारे एकका दूसरेमें जाताहैं ॥ १२३ ॥ और वह गधा महाक्रोध था और वह

भिक्षादत्तानचार्थिभ्यस्तेनपापेनकर्मणा ॥ वीचिकल्लोलमालाभिर्गच्छतस्ते परस्परम् ॥ १२३ ॥ खरःक्रोधस्तथादृष्टःकुञ्जरोमदउच्यते ॥ ब्राह्मणोसाव नन्तोहंगुहासंसारगह्वरम् ॥१२४॥ इत्युक्तादेवदेवेशस्तत्रैवान्तरधीयत ॥ स्वप्नप्रायंतुतद्दृष्ट्वाततःस्वगृहमागतः ॥ १२५ ॥

हाथी अहंकारथा और वह वृद्धब्राह्मण तौ संसाररूपी गुहामें मैंही था ॥ १२४ ॥ इस प्रकार अनन्त भगवान् कहकर उसी समय अनन्त अन्तर्धान होगये और वह ब्राह्मण स्वप्नकी समान उस वृत्तान्त को देखकर अपने घरको चला गया ॥ १२५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीकृष्णजी बोले हे युधिष्ठिर! चौदहवर्ष तलक अनन्तके व्रतको करके सारे भोगोंको भोगकर ॥ १२६ ॥ वह ब्राह्मण मरते समय विष्णुभगवान्का ध्यानकर अनन्तके लोकको चलागया इसी

कृत्वानन्तव्रतंसम्यङ्नववर्षाणिपञ्चच ॥ भुक्तासर्वमनन्तेनयथोक्तंपाण्डुनन्दन ॥ १२६ ॥ अन्तेचस्मरणंप्राप्यगतोनन्तपुरेद्विजः ॥ तथात्वमपिराजर्षेकथांशृण्वन्व्रतंकुरु ॥ १२७ ॥ प्राप्स्यसेचिन्तितंसर्वमनन्तस्यवचोयथा ॥ यद्वैचतुर्दशेवर्षेफलंप्राप्तंद्विजन्मना ॥ १२८ ॥

प्रकार हे राजन्! आपभी व्रत करके इसकी कथाको सुनिये ॥ १२७ ॥ इसीसे तुम अपने इस राज्यको प्राप्त होजाओगे जैसे अनन्तके कहनेसे वह ब्राह्मण चौदहवर्षमें अपने इष्टफलको प्राप्तहो गया ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ १२८ ॥ इस व्रतके करनेसे और कथाके सुननेसे प्राणी एकही वर्षमें फलको प्राप्त होजाताहै हे राजन् ! यह व्रतोंमें उत्तम व्रत हमने तुम्है सुनाया ॥ १२९ ॥ जिस व्रतके करनेसे निःसंदेह प्राणी पापोंसे

वर्षैकेनतदाप्नोतिकृत्वासाख्यानकंव्रतम् ॥ एतत्तेकथितंभूपव्रतानामुत्तमंव्रतम् ॥ १२९ ॥ यत्कृत्वासर्वपापेभ्योमुच्यतेनात्रसंशयः ॥ येपिशृण्वन्तिसततंपठ्यमानंपठन्तिये ॥ तेपिपापविनिर्मुक्ताःप्राप्स्यन्तिचहरेःपदम् १३० ॥ संसारसागरगुहासुसुखंविहर्तुवाञ्छन्तियेकुरुकुलोद्भवशुद्धसत्त्वाः ॥ संपूज्यच त्रिभुवनेशमनन्तदेवंबध्नन्तिदक्षिणकरेवरदोरकंते १३१ इत्यनन्तकथास०।

छूट जातेहैं और जो इस कथाको सुनतेहै और जो पढतेहैं वेभी सारे पापोंसे छूटकर निःसंदेह विष्णुलोकको चले जातेहै ॥ १३० ॥ श्रीकृष्णचन्द्र बोले हे युधिष्ठिर ! जो पवित्र प्राणी संसार सागरकी गुफामें विचरनेकी इच्छा करतेहैं वे अनन्तदेवका पूजनकरके दाहिने हाथमें अनन्तका पवित्रडोरा बंधतेहैं १३१

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति श्रीब्रजरत्नभट्टाचार्य्यकृत भाषाटीका अनन्तव्रतकथा समाप्ता ॥ ॥ शुभंभवतु ॥

दोहा– क्षमा करहु बुधलोग भूलचूक पावो जहाँ । आशिषदेहु सयोग, बढै निरन्तर प्रीतिबहु ॥ १ ॥

ब्रजरत्नभट्टाचार्य्य मुरादाबाद–गंज.

इदं पुस्तकं श्रीकृष्णदासात्मज गङ्गाविष्णुना स्वकीये "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणालयेऽङ्कितम् (शके १८१५ संवत् १९५०)

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना.

कल्याण——(मुंबई)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निरुक्ति निर्वचन दो व्याख्याओंसे युक्त भगवद्गुणदर्पणाख्य विष्णुसहस्रनामभाष्य-
की और विष्णुसहस्रनाम दीपिकाकी तथा विष्णुसहस्रनाम चंद्रिकाकी-

जाहिरखबर.

अनुष्टुप्श्लोकात्मक निरुक्तिव्याख्यासमेत और प्रकृतिप्रत्ययको दिखानेवाले पाणिनिसूत्रोंसे गर्भित ऐसी निर्वचननामक द्वितीयव्याख्यासे युक्त भगवद्गुणदर्पणनामक विष्णुसहस्रनामभाष्य आधा छपरहाहै अवशिष्ट छपताहै और उक्त भाष्यके अनुसार विष्णुसहस्रनामका व्युत्पत्तिसहित हिंदीभाषामें दीपिकानामक ग्रंथ सोभी द्वितीयपुस्तक तथा शांकरभाष्यके अनुकूल विष्णुसहस्रनामका व्युत्पत्तिसहित हिंदीभाषामें चन्द्रिकानामक ग्रन्थ कियाहै सो यहदोनों पुस्तकैं अत्यंत सुंदर छोटे बडे अक्षरोंमें छपकर विक्रयार्थ प्रस्तुतहैं तिनपुस्तकोंको जिनमहाशयोंको लेनेकी और देखनेकी इच्छा हो उन्होंने शीघ्र सूचना करना तब उक्तपुस्तकोंको भेजनेमें उद्यत होवेंगे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

व्याख्याद्वयोपेतस्य भगवद्गुणदर्पणाख्यस्य श्रीविष्णुसहस्रनामभाष्यस्य

प्रसिद्धिपत्रिका ।

अनुष्टुप्श्लोकात्मकनिरुक्त्याख्यव्याख्यासमेतं, नामनिर्वचनोपयोगिप्रकृतिप्रत्ययप्रदर्शकनिखिलतन्त्रप्रधानीभूतपाणिनीयस्मृतिसूत्रगर्भितनिर्वचनाख्यद्वितीयव्याख्यासमेतं च, सहृदयहृदयाह्लादकंश्रीभगवद्गुणदर्पणाख्यं श्रीविष्णुसहस्रनामभाष्यमासीत्तैलङ्गदेशाक्षरैर्द्राविडदेशाक्षरैश्चमुद्रितम्, तच्चास्मदीयदेशेऽतीव दुर्लभतरमिति मनसि निधाय सकलजनोपकृतयेऽतिप्रयासेन तैलङ्गदेशादिहानाय्य देवाक्षरैर्लेखयित्वा मुहुर्मुहुरभिज्ञजनद्वारा संशोध्य च, स्थूलसूक्ष्माक्षरैर्मनोहरं मुद्र्यते, येषां महाशयानां स्याज्जिघृक्षा तैर्द्रुततरम् सूचना कार्या, यतस्तत्पुस्तकप्रेषणेऽहमुद्यतो भवेयमिति मे विज्ञप्तिः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गोविन्दराजीयभूषणाख्यया तनिश्लोक्याख्यया रामानुजीयाख्यया च व्याख्यया समेतस्य श्रीवाल्मीकिरामायणस्य

प्रसिद्धिपत्रिका।

भो भो विद्यापारावारपारीणा इदं विदाङ्कुर्वन्त्वत्रभवन्तः—तनिश्लोक्याख्यया भूषणाख्यया रामानुजीयाख्यया च व्याख्यया समेतं श्रीवाल्मीकिरामायणम् अत्युत्तमतैलङ्गदेशीयपुस्तकमालोच्य पण्डितैः संशोधितं, तच्च सम्प्रतिमुव्यक्तैः स्थूलसूक्ष्माक्षरैर्लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर मुद्रणयन्त्रे मुद्र्यते, तस्य च नागेशप्रभृतिविनिर्मिताः सन्ति यद्यपि बह्वचोव्याख्याः, तथापि सहृदयहृदयाह्लादकनानाविधाऽपूर्वार्थान्वेषणे प्रयतमानैरार्यकुलोचितधर्ममर्यादाविचारशीलैर्महाशयैर्निर्विशेषत्वेन सविशेषत्वेन च ब्रह्मस्वरूपप्रतिपादकवेदान्तवाक्यानां समीचीनतर्कसहकृतिविषयभेदव्यवस्थापनेनतात्पर्यार्थनिर्णायकतया श्रीवाल्मीक्यभिप्रायानुगा रामानुजीयव्याख्यातनिश्लोकी व्याख्यासमेता भूषणाख्यव्याख्याऽवश्यंनिरीक्षणीयेति [illegible]ऽहंनिरीक्षणेनाभिज्ञानामवश्यं जिघृक्षाभवेदिति ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तर्कसंग्रहव्याख्यायाः लघ्वीबोधिनी समाख्यायाः
प्रसिद्धिपत्रिका ।

भो भो न्यायशास्त्राऽधिजिगांसवो विदाङ्कुर्वन्त्वत्रभवन्तः जगत्प्रसिद्धश्रीवृन्दावननिवासिश्रीरङ्गाचार्य स्वामिप्रणीता लघुबोधिनीसमाख्या तर्कसंग्रहसमेता तर्कसंग्रहव्याख्या साम्प्रतं "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणागारे संमुद्यप्रकाशिता सा च न्यायशास्त्रपरिभाषाजिज्ञासूनामतीवोपकारिणी तस्यां च, इतरव्याख्यापेक्षया अधिका उपयुक्ताश्च सर्वेऽपि विषयाः अल्पशो दर्शिताः, तथा च मन्येऽहमेतदध्ययनेन गादाधरीजागदीशीत्याद्याकरग्रन्थाध्ययनेव्यवसायशालिनोऽवश्यं समुत्सहेरन्, येषांमहाशयानां जिघृक्षाचेत् तैः सूचना कार्येति मे विज्ञप्तिः।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना

कल्याण-(मुंबई)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection